ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 106-108

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

# मिथिला लोक कला को संरक्षित एवं सवंर्धित करती कलाकार महिलायें

**डॉ० शालिनी धामा**

सहायक आचार्य– ललित कला विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

**Received-23.10.2023, Revised-30.10.2023, Accepted-05.11.2023** **E-mail: shalini197615@gmail.com**

***सारांशः*** ***लोक कला किसी भी क्षेत्र या स्थान का लोक सांस्कृतिक परम्पराओं का दर्पण होती है। भारत एक प्राचीन सांस्कृतिक देश है इसलिये यहाँ कला एवं संस्कृति में लोक कला की विभन्नता दिखाई देती है। भारतीय लोक कला जन सामान्य की कला है, भारतीय ग्रामीण सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है उतना ही बिहार की लोक कला मिथिला का इतिहास भी है। मिथिला लोक कला की उत्पत्ति रामायण काल से मानी जाती है। प्राचीन मान्यता के अनुसार राजा जनक ने राम–सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाये थे। प्रारम्भ में ये कला गांवों की मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में देखने को मिलती थी। पहले केवल ऊँची जाति की ब्राह्मण महिलाओं को ही इस कला को बनाने की इजाजत थी, लेकिन समय के साथ ये सीमाएं भी खत्म हो गई। आज मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलाएँ इस काल में निपुण हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– मिथिला लोक कला, लोक सांस्कृतिक परम्पराओं , भारतीय ग्रामीण सभ्यता, चित्रकला, कलाकार, लोक प्रियता।***

धार्मिक लोक जीवन मिथिला लोक चित्रों के मुख्य विषय वस्तु रहे हैं, जिसको ग्रामीण महिला कलाकारों ने आज तक जीवित रखा है। यह मिथिलांचल क्षेत्र जैसे बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। बिहार का छोटा सा एक गाँव जितवापुर इस लोक चित्रकला का मुख्य केन्द्र है। दरभंगा एवं मधुबनी को मिथिला संस्कृति का द्विरुव माना जाता है। मैथिली यहाँ की प्रमुख भाषा है। विश्व प्रसिद्ध मिथिला पेंटिंग की वजह से मधुबनी को विश्व भर में जाना जाता है। 1960 से पहले यह कला केवल भारत के उत्तर बिहार में मिथिला क्षेत्र तक ही जीवित थी। इस कला शैली की जड़ें स्थानीय क्षेत्र की सांस्कृतिक व परम्पराओं से जुड़ी हैं। प्रारम्भ में यह चित्रकला रंगोली के रूप में विकसित हुई, फिर बाद में यह कला धीरे–धीरे आधुनिक रूप में कपडों, दीवारों एवं कागज पर उतारी गई। आज अशिक्षित महिलाएं ही नहीं, बल्कि शिक्षित व प्रशिक्षित महिलाओं व पुरूषों के द्वारा मिथिला लोक कला को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान है। पूजा स्थान, कोहबर कक्ष, (विवाहितों के कमरे में) आदि खास स्थानों पर और शादी या किसी खास त्यौहारों व उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों को महिलायें जीवांत चित्रों से सजाती है। मधुबनी मिथिला संस्कृति का अंग एवं केन्द्र बिन्दु रहा है। राजा जनक और सीता का वास स्थान होने से हिन्दुओं के लिए यह क्षेत्र अति पवित्र एवं महत्वपूर्ण है। धार्मिक प्रवृति के होने के कारण यहाँ की लोक कला के विषय भी धार्मिक ही थे। इनके मुख्य विषय थे प्राकृतिक नजारे जैसे– सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड़–पौधे जैसे तुलसी हिन्दू देवी है। राम–सीता, शिव'पार्वती, राधा–कृष्ण, काली, दुर्गा, गौरी–गणेश, लक्ष्मी–विष्णु के दस अवतार, हनुमान आदि चित्रों को अधिकाधिक रूप में चित्रित किया गया है। इन पेंटिंग में मिथिला संस्कृति की पहचान छिपी है।

मिथिला लोक कला रेखा प्रधान होने के साथ–साथ रंग प्रधान भी है। ये चित्र विशुद्ध प्राकृतिक रंगों द्वारा बनाये जाते थे, जो हल्दी, चावल के आटे व दूध, फूलों, फलों व पौधों की पत्तियों से जैसे केले के पत्ते, लाल रंग के लिये पीपल की छाल के रस निकाल कर घरेलू प्रक्रिया से तैयार किये जाते थे व फिर कागज के कैनवास पर भरे जाते थे। आज कल प्राकृतिक रंगों की जगह बाजार से उपलब्ध रासायनिक रंगों का प्रयोग किया जा रहा है।

पूर्व के समय में यह कला भूमि व भित्ति पर ही चित्रित की जाती थी अपितु वर्तमान समय में इसके धरातल, आकार व माध्यम में विभिन्न परिवर्तन देखने को मिलता है। इस लोक चित्रकला में चटख रंगों का प्रयोग किया गया है जैसे गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों का भी प्रयोग किया गया है जैसे गुलाबी, पीला नींबू रंग। चित्र बनाने के लिए माचिस की तीली व बांस की कलम को प्रयोग में लाया जाता है। प्राचीन समय में रंग की पकड़ बनाने के लिए चिकनी मिट्टी व गाय के गोबर के मिश्रण में बबूल की गोंद को मिलाकर दीवारों पर लिपाई की जाती थी।

**मिथिला लोक कला की प्रमुख शैलियाँः– मिथिला लोक कला के अन्तर्गत प्रमुख पाँच शैलियाँ आती हैं–**

1. कटचनी, 2. गोदना, 3. भरनी, 4. कोहबर, 5. तांत्रिक

मिथिला लोक कला की भरनी और तांत्रिक शैलियाँ प्रमुख रूप से भारत और नेपाल में ब्राह्मण महिलाओं द्वारा 1960 के दशक में बनाई गई थी और अन्य जातियों के कलाकारों ने अपने चित्रों में दैनिक जीवन को विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया है। वर्तमान समय में, मिथिला पेंटिंग जाति भेद भाव से ऊपर उठकर एक वैश्विक कला के रूप में विकसित हुई है। आजकल कलाकार स्वतन्त्र रूप से सभी शैलियों में कार्य कर रहे हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिथिला लोक कला को पहचाना जा रहा है। सही मायने में मिथिला कला का व्यावसायिक करण सर्वप्रथम सन् 1962 में शुरू हुआ। जब एक कलाकार ने इन गाँवों का भ्रमण किया, यहाँ की महिला कलाकारों को इस कलाकार ने अपनी पेंटिंग पर दीवारों से कागज पर उतारने के लिए प्रेरित किया और यह प्रयोग व्यवसायिक रूप से बहुत ही कारगर साबित हुआ। आज मिथिला कला शैली में बहुत उत्पाद बनाए जा रहे हैं जिसका बाजार फैलता ही जा रहा है। वर्तमान समय में इन पेंटिंग का उपयोग बैग, परिधानों, साड़ी, शॉल, कुशन कवर, बैड़शीट व कार्ड, दरी आदि अनेक माध्यमों पर किया जा रहा है, जो लागों के द्वारा बहुत पसन्द की जा रही है और इसलिये ही इस कला की मांग न केवल भारत के घरेलू बाजार में बढ रही है, वरन् विदेशों में भी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

मिथिला की महिलाओं ने परम्परा और धर्म को एक साथ जोड़कर जो नये रूप का निर्माण किया वह सराहनीय है। इस कला

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

की अनूठी बात यही है कि इस लोक कला के प्रोत्साहन व ख्याति में महिला कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अपनी परम्पराओं को जीवित रखने के साथ ही महिलाओं ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। आज इस कला पर व्यवसायिकता का रंग इस कदर चढ़ता जा रहा है, मानो इस लोक कला ने पंख लगाकर उड़ना सीख लिया है।

**मिथिला कला की महिला कलाकार–**

**जगदंबा देवी :** जगदम्बा देवी मिथिला पेंटिंग में पद्मश्री प्राप्त करने वाली पहली महिला कलाकार भी बनी थीं। 25 फरवरी 1901 को मधुबनी जिले के भोज पंड़ौल गाँव में जन्मी जगदम्बा देवी उन कलाकारों में से एक है जिनके माध्यम से मिथिला पेंटिंग वैश्विक पटल पर उभरी। 1975 में भारत सरकार ने उन्हें "पद्मश्री" से सम्मालित किया था। पद्मश्री सम्मान के अलावा भी उन्हें कई पुरस्कार मिल चुके हैं। 04 जनवरी को अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड ने मिथिला में चित्रकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए जगदम्बा देवी को सम्मानित किया। उनके अधिकतर चित्र पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं और साथ ही उनके चित्रों में लाल रंग की प्रधानता पायी जाती है।

**सीता देवी :** मिथिला कलाकार सीता देवी मिथिला कला को घर की दीवारों और आंगन से कागज और कैनवास तक स्थानान्तरित करने वाली पहली कलाकार मानी जाती हैं। सीता देवी का जन्म 1914 में सुपौल जिले के वसाहा गाँव में हुआ था। 12 वर्ष की उम्र में उनकी शादी मधुबनी जिले के जितवारपुर गाँव में हुई थी। सीता देवी ने मधुबनी बनाना अपनी माँ व दादी से सीखा। साल 1986 में उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया और इसके बाद साल 1984 में बिहार रत्न भी दिया गया। उनकी राधा–कृष्ण और देवी–देवताओं की पेंटिंग को सबसे अधिक प्रसिद्धि मिली।

**महासुन्दरी देवी :** महासुन्दरी ने कागज पर पेंटिंग बनाने से आगे बढ़कर 1970 में साड़ी पर 1973 में लकड़ी और प्लाई बोर्ड पर पेंटिंग बनाना शुरू किया। उनमें दशावतार कृष्ण जन्म कथा, राम–सीता विवाह, राम लीला और शिव–पार्वती जैसे आकर्षक विषय शामिल थे। उन्हें रेशम, कपड़ें और सिरेमिक व प्लाईबोर्ड पर मिथिला पेंटिंग बनाने वाली पहली कलाकार होने का श्रेय दिया जाता है। वर्ष 2011 में रांटी की महासुन्दरी देवी को पद्मश्री पुरस्कार दिया गया। महासुन्दरी देवी का जन्म 15 अप्रैल 1922 को मधुबनी जिले के चतरा गाँव में हुआ था। जब वह पाँच वर्ष की थी, तब उनके पिता रामजीवन लाभ और माता दुलादी देवी का निधन हो गया। चाची व बुआ की देखरेख में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। जब वह 17 साल की थीं, तब उनका विवाह मधुबनी जिले के रांटी गाँव के कृष्ण कुमार दास से हुआ लेकिन विवाह के उपरान्त भी वह पेंटिंग करती रहीं।

**गंगा देवी :** मधुबनी जिले के रसीदपुर गाँव की गंगा देवी को पद्मश्री के लिये चयनित किया गया। साल 1984 में गंगा देवी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। गंगा देवी जिन्हें मिथिला पेंटिंग में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार से राष्ट्रीय पुरस्कार से भी नवाजा गया। उन्होंने सूक्ष्म रंगों के उपयोग से प्रसिद्ध भारतीय महाकाव्य, रामायण को चित्रों की श्रंखला में चित्रित किया।

**गोदावरी दत्त :** 1930 में दरभंगा के बहादुरपुर गाँव में जन्मे गोदावरी दत्त की बचपन से ही मिथिला कला में रूचि थी। उन्होंने उपनी माँ सुभद्रा देवी के आधे–अधूरे चित्रों को छिपाकर रंगना शुरू किया था। उनकी माँ ने ही उन्हें प्रशिक्षण दिया। वह मिथिला पेंटिंग की महादेवी वर्मा कहलाती हैं। 2019 में इनको पद्मश्री से नवाजा गया। गोदावरी दत्त की पेंटिंग समुद्र मंथन, त्रिशूल, कोहबर, वासुकी नाग आदि काफी प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा बनाई गयी मिथिला पेंटिंग को जापान मिथिला म्यूजियम में भी स्थन प्राप्त है। उन्होंनें अपनी अमेरिका की यात्रा को भी चित्रों के माध्यम से दर्शाया है।

**दुलारी देवी :** दुलारी देवी मिथिला पेंटिंग की कचिनी शैली की मास्टर हैं। दुलारी देवी को 2021 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पाने वाली वह पहली दलित कलाकार हैं। इनका जन्म 27 दिसम्बर 1967 को मधुबनी जिले के रांटी गाँव में एक मछुआरे परिवार में हुआ था। इनकी शादी 12 साल की उम्र में कर दी गयी। ससुराल में कुछ दिक्कतों के बाद वह वापस अपने माता–पिता के साथ रांटी गाँव में रहने ली। उन्होंने अपने गाँव की जानी मानी मिथिला पेंटिंग कलाकर महासुन्दरी देवी और कपूरी देवी के घर 6 रूपये महीने पर सफाईकर्मी का काम मिल गया। वह महासुन्दरी देवी व कपूरी देवी को पेटिंग बनाते देखा करती थी। धीरे–धीरे वह भी पेंटिंग बनाने लगी । यहीं से उनका सफर शुरू हो गया। उनके कार्य को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में मैथिली भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में प्रदर्शित किया गया। इन्होंने पेंटिंग के अलावा भारत में केन्द्र व राज्य सरकारों के लिये कई भित्ति चित्र भी बनाये हैं। दुलारी देवी मधुबनी में स्थित मधुबनी कला संस्थान में प्रशिक्षक हैं जहाँ वे बच्चों को लोक कला का प्रशिक्षण देती हैं।

**बउआ देवी :** मिथिला पेंटिंग का गढ़ माने जाने वाले जितवारपुर गाँव की रहने वाली बउआ देवी महज 13 साल की उम्र से ही मिथिला चित्रकला बनाती आ रही हैं और अब तक उन्हें इस चित्रकला में लगभग 60 वर्ष हो चुके हैं। मिथिला पेंटिंग से जुड़े दुनिया के हर मंच पर उन्हें पुरस्कृत किया जा चुका है उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए साल 2017 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उन्हें पहले भी 1984 में मिथिला कला के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

**सुभद्रा देवी :** मधुबनी की सुभद्रा देवी को वर्ष 2023 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उन्हें पेपरमेशी कला में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए ये पुरस्कार दिया जा रहा है। इससे पहले उन्हें 1980 में राज्य पुरस्कार और 1991 में राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

**आकर्षण एवं उपलब्धियाँ :** मिथिला लोक कला को विश्व प्रसिद्धि दिलाने के लिये भारतीयों व विदेशियों का बहुत बड़ा हाथ है, जैसे– डब्लू० जी० आर्चर, हासेगावा, श्रीमति जयकर, उपेन्द्र महारथी, भास्कर कुलकर्णी, श्री ललित नारायण मिश्र आदि लोगों के प्रयास स्वरूप ही यह लोक कला विश्व भर में प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रही है।

मधुबनी के रेलवे स्टेशन पर स्थानीय मिथिला पेंटिंग के कलाकारों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिथिला पेंटिंग के सम्मान को और बढ़ाये जाने के लिए तकरीबन 10,000 Sqf/t में मधुबनी रेलवे स्टेशन की दीवारों को मिथिला पेंटिंग की कलाकृतियों से सुसज्जित किया। उनकी ये पहल निःशुल्क अर्थात् श्रमदान के रूप में की गई थी। श्रमदान स्वरूप किये गये इस अद्भुत कलाकृतियों को विदेशी पर्यटकों व सैनानियों द्वारा पसन्द किया जा रहा है।

जापान में भी मधुबनी पेंटिंग के इतिहास से जुड़ी एक संग्रहालय है।

2018–19 में भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल में जयन्त–जनता एक्सप्रेस ट्रेन पर मधुबनी पेंटिंग कर चलाया गया था जिसे विश्व में बहुत प्रशंसा मिली। दरभंगा मधुबनी के 50–60 कलाकारों ने मिलकर, अपने अथक मेहनत से इस पर सुन्दर पेंटिंग कर सजाया था।

**निष्कर्ष–** मिथिला लोक कला को संरक्षण एवं प्रसिद्धि प्रदान करने में महिला कलाकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिसमें मुख्य रूप से आधुनिक महिला कलाकारों में शालिनी कर्ण, महालक्ष्मी, मालविका राज भी आज नित नये प्रयोग द्वारा मिथिला कला को आगे बढ़ा रही है। लोक कला को सर्वमान समय तक जीवित रखने का श्रेय केवल और केवल महिला कलाकारों को जाता है। हांलाकि वर्तमान में पुरूष कलाकार भी इस क्षेत्र में पूरी रूची दिखा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार भी महिला कलाकारों ने प्राप्त किये हैं। मिथिला कला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का श्रेय भी महिला कलाकारों को जाता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. http://hindi.webdunia.com>madh
2. http://www.abplive.com>bihar
3. http://en.wikipedia.org>wiki>DU...
4. http://hi.m.wikipedia.org>wiki
5. http://www.khanacademy.org>pol
6. http://sarmaya.in>spotlight
7. http://www.gaonconnection.com>...
8. मानावत, डॉ० महेन्द्र, लोक कला मूल्य और सन्दर्भ– भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर।
9. बड़ेरिया, तरक नाथ,– बिहार की लाक कलाएं एवं शिल्प, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
10. झा, लक्ष्मीनाथ, मिथिला की सांस्कृतिका लोक चित्रकला।
11. ब्रजेश कुमार, मिथिला की लोक चित्रकला, कला परम्परा।
12. अवधेश अमन, मिथिला की लोक चित्रकला, सफलताएँ असफलताएँ।

**चित्र लिंक–**

1. https://images.app.goo.gl/9q53gnPAwArQusx29
2. https://images.app.goo.gl/ieZ~tDyeaNaZ8k6ue9
3. https://images.app.goo.gl/AGHe5tWqgHw9Dw5x5
4. https://images.app.goo.gl/abXdtNj1USyVMbdA
5. https://images.app.goo.gl/TnKCCiWWL9f6xXvF6

*****